

सत्य एक है (2 का भाग 1)

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख सबूत इस्लाम सत्य है तार्ककि प्रमाण](#)

द्वारा: M. Abdulsalam (© 2006 IslamReligion.com)

पर प्रकाशति: 08 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 27 Nov 2022

धरुड की चरुा करते समय अकसर यह सुनने को मलिता है ककिसी को भी कसी और के वशिवासों को आंकने का अधकिार नहीं है, या धरुड वुडकृतकि नजिी मामला है और हड इसे गलत या सही नहीं कह सकते। पूरे इतहिस में, समाजों ने अपने कानूनों और नैतकिता को "पूरुण सतुड" पर आधारति कथिा है, जसिे वे "सही" मानते हैं, और यह या तो एक बाहरी पाठ का परणिाड है जसिे सर्वोचुच माना जाता है, या डनुषुडों की जनुडजात परकृतडिें पाए जाने वाले गुण का परणिाड है जसिसे उनुंहे कुडु चीजे अकुडु और कुडु चीजे बुरी लगती हैं। डनुषुड एक सीडडति डैडाने पर कुडु चीजों को अकुडु और बुरा देखता है। उदाहरण के लिए, सभी डनुषुड डडिा डन की वकृतकिे अपनी पराकृतकिे अवसुथा में कुडु डडिे गए डल और डूतुर को गंडगी के रूड में देखते हैं। और चोरी, हतुडा और डूठ जैसे कडडों को बुरा माना जाता है, जबकसि तुडु, ईडानडारी और सडुडान को अकुडु माना जाता है। यह एक गुण का परणिाड है जो सभी डनुषुडों में डनया गया है, लेकडिे जैसा कडुडर डताया गया है यह डडवना सीडडति है।



डडकिेई कहता है कडुडनुंहे डूसरे के वशिवासों या कडरुडों को आंकने का अधकिार नहीं है, तो वे वासुतव में सुवडुंग का खुंडन करते हैं। डडडिआप इनडें से कडुई लुगुओं से पूरुं ककिुडु डकुडु को डारना या आतुडहतुडुड करना सही है, तो वे सुवाडडवकिे रूड से उतुतर डेंगे कथिे सही नहीं है। लेकडिे हड कुडु समाजों को देखते हैं, जैसे कडडिडुडु अडेरकिा में पाए जाने वाले कुडु धरुड, जसिडें डकुडु की हतुडुड को अपने डेवताओं के करीड आने का एक तरीका माना जाता था। साथ ही आज भी हडुडु धरुड में डतकिी डूतुडु के डडड डतुनी का अपने आड को डारना परशंसनीड माना जाता है। डडडिे वासुतव में मानते हैं कडिे

धर्म व्यक्ति का नज्जी मामला है और किसी को भी उसको आंकने या उसमे हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है, तो इसके लिए उन्हें बचो को मारने की अनुमति देनी होगी जो इसे सही और प्रशंसनीय मानते हैं, और लोगों को उन्हें आंकने का कोई अधिकार नहीं है।

यदि हम इस मुद्दे को एक व्यक्तिगत स्तर पर लाते हैं, तो हम देखेंगे कि प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई और बुराई की अपनी व्यक्तिगत धारणा है, चाहे यह धारणा धर्म, कानून, संस्कृति या व्यक्तिगत विचार पर आधारित हो। कोई यह मान सकता है कि विचार करना पूरी तरह से सही है जबकि दूसरा इसे गलत मान सकता है। कोई यह मान सकता है कि उनके लिए नशीले पदार्थों का सेवन सही है क्योंकि यह उनका अपना शरीर है, और अन्य लोग इसे अपराध मान सकते हैं। कोई भी यह नहीं कह सकता कि क्या सही है या क्या गलत है, और सभी लोगों को उनके ऊपर छोड़ दिया जाएगा कि वह वो करें जैसी वे "सही" मानते हैं।

यदि हम समाज में इस विश्वास को लागू करते तो हमारा समुदाय अराजकता पर आधारित होता, जहां न तो कोई कानून बनाया जा सकता और न ही उसे क्रियान्वित किया जा सकता, क्योंकि कानून इस सिद्धांत पर आधारित है कि कुछ चीजें सही हैं और कुछ बुरी। यदि कोई यह कहे कि कुछ ऐसे सत्य हैं जिन पर सभी मनुष्य सहमत हैं और जिनका उपयोग कानून बनाने के लिए किया जा सकता है, तो यह एक निश्चित सीमा तक सही है, क्योंकि जैसा कि हमने कहा कि सभी मनुष्यों में स्वाभाविक रूप से सही और गलत जानने का एक गुण होता है। लेकिन ऐसा देखा गया है कि यह गुण कई बार पर्यावरण, मनोवैज्ञानिक या धार्मिक कारणों की वजह से विकृत हो जाता है, जिसमें कुछ कार्य जो एक समय में बुरे और अनैतिक थे, बाद में उन्हें अच्छे और स्वीकार्य माने जाते हैं, और कुछ चीजें जो मानव स्वभाव के अनुरूप नहीं हैं, उन्हें मोक्ष की कुंजी माना जाता है। यह लोकतांत्रिक समाजों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जिनके कानून बहुमत पर आधारित होते हैं। हम देखते हैं कि बहुत सी चीजें जिन्हें पूरी तरह से बेतुका या अनैतिक माना जाता था, अब सामाजिक रूप से इसे इस हद तक स्वीकार्य माना जाता है कि अगर कोई इस मुद्दे के संबंध में एक अलग राय रखता है तो उसे बहिष्कृत कर दिया जाता है।

इसी वजह से मनुष्यों को उनके ऊपर नहीं छोड़ा जा सकता कि वो फैसला करे कि क्या सही है और क्या गलत है। यहां तक कि एक ही धर्म के समाजों में जिन्होंने धर्म और राज्य के अलग नियम बनाये हैं, यद्यपि उन बातों से सहमत हैं जो उन्होंने अपने धर्म से सीखी है, लेकिन इस संबंध में वे बहुत अलग हैं कि उनके समाज में क्या सही है और क्या गलत है। फ्रांस में संभोग करने की जो कानूनी उम्र है उसे अमेरिका में बलात्कार माना जाता है। जहां एक देश में गर्भपात कानूनी है, वहीं दूसरे में यह अपराध है, और जहां समलैंगिकता को एक समाज में वैध माना जाता है वहीं इसे दूसरे समाज में एक गंभीर पाप माना जाता है।

इसलिए यदि अब हम कहें कि सत्य नरिपेक्ष और एक है, और किसी व्यक्ति और समाज से संबंधित नहीं है, तो अगला प्रश्न यह है कि वे कौन सी नैतिकता हैं जो सत्य को बताती हैं और उसका नरिणय कौन लेता है? ऐसे कौन से कानून हैं जिन्हें समाज में लागू किया जाना चाहिए? क्या उन्हें वकीलों और न्यायाधीशों द्वारा तय किया जाना चाहिए जो "कानूनी ज्ञान" के एक स्तर तक पहुंच चुके हैं, क्या उन्हें राजनेता द्वारा तय किया जाना चाहिए जो आमतौर पर अपने फायदे के लिए या अपने देश के फायदे के लिए नरिणय लेते हैं, या दार्शनिकों द्वारा तय किया जाना चाहिए जो अपने स्वयं के चित्त के माध्यम से सार्वभौमिक सत्य को जानते हैं? जैसा कि पहले देखा गया है, मनुष्यों को इन मुद्दों को तय करने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता, कहीं ऐसा न हो कि परिणाम भयावह हों, जैसा कि आज देखा जा सकता है कि कई समाजों में कई बुराइयां हैं। सही और गलत का कानून बनाने का अधिकार केवल उसी को है जिसने हमें बनाया है और जानता है कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है, और वह सर्वशक्तिमान ईश्वर है। यह ईश्वर ही है जिसने दुनिया को बनाया है और यह ईश्वर ही है जिसने न्याय के नियमों को नरिधारित किया है। वह ईश्वर ही है जो पूर्ण है और वह ईश्वर ही है जिसमें कोई दोष नहीं है।

हमारी अधिकांश चर्चा विश्वास के मुद्दों से संबंधित है जो नैतिकता और कर्मों से संबंधित है, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण वो विश्वास हैं जो ईश्वर से संबंधित हैं, और इस पर चर्चा अगले लेख में की जाएगी।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/8>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।